

Ques # :1

according to shankara's essential character of reality is -

- 1) trikalabadhitva
- 2) arthakriyakaritva
- 3) utpadvyayadhrauvyayuktata
- 4) satva , abhidheyatva aud jneyatva

शंकर के अनुसार सत् - की अनिवार्य विशेषता है

- 1) त्रिकालाबाधित्व
 - 2) अर्थक्रियाकारित्व
 - 3) उत्पादव्ययध्रौव्यययुक्तता
 - 4) सत्त्व , अभिधेयत्व और ज्ञेयत्व
-

Ques # :2

according to ramanuja world is -

- 1) real change of brahmana
- 2) vivarta of brahmana
- 3) real change of prakriti
- 4) shunya

रामानुज के अनुसार जगत है -

- 1) ब्रह्म का वास्तविक परिणाम
 - 2) ब्रह्म का विवर्तरूप
 - 3) प्रकृति का वास्तविक परिणाम
 - 4) शून्य
-

Ques # :3

according to the vaisheshika universal are -

- 1) concepts
- 2) names
- 3) eternal categories
- 4) qualities

वैशेषिक दर्शन के अनुसार सामान्य -

- 1) धारणार्थ हैं
 - 2) नाम हैं
 - 3) नित्यपदार्थ हैं
 - 4) गुण हैं
-

Ques # :4

in buddhism the basis of the denial of eternal substances is the principle of -

- 1) noble truths
- 2) dependent origination (pratityasamutpad)
- 3) anatmavada

4) shunyavada

बौद्ध दर्शन के अनुसार नित्य द्रव्य की सत्ता के खंडन का आधार -

- 1) आर्यसत्य का सिद्धांत है
 - 2) प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत है
 - 3) अनात्मवाद का सिद्धांत है
 - 4) शून्यवाद का सिद्धांत है
-

Ques # :5

according to nyaya system -

- 1) self is consciousness as such
- 2) consciousness is necessary quality of the self
- 3) consciousness is accidental quality of the self
- 4) body qualified with consciousness is self

न्याय के अनुसार -

- 1) आत्मा चैतन्य स्वरूप है
 - 2) चैतन्य आत्म द्रव्य का अनिवार्य गुण है
 - 3) चैतन्य आत्म द्रव्य का आकस्मिक गुण है
 - 4) चैतन्य विशिष्ट शरीर ही आत्मा है
-

Ques # :6

which of the following statements is true regarding individual soul and absolute in shankara's philosophy -

- 1) individual soul and absolute are one
- 2) individual soul and absolute are separate
- 3) individual soul and absolute are void
- 4) individual soul and absolute do not exist

निम्न में से जीव और ब्रह्म के विषय में शंकर दर्शन में कौनसा सिद्धांत सत्य है -

- 1) जीव और ब्रह्म एक ही है
 - 2) जीव और ब्रह्म दोनों भिन्न है
 - 3) जीव और ब्रह्म शून्य रूप है
 - 4) जीव और ब्रह्म का अस्तित्व नहीं है
-

Ques # :7

kumaril's theory of error is known as -

- 1) akhyati
- 2) sat-asat-khyati
- 3) viparit khyati
- 4) atma khyati

कुमारिल के भ्रम विषयक सिद्धांत को जाना जाता है -

- 1) अख्याति
 - 2) सत्-असत् ख्याति
 - 3) विपरीत ख्याति
 - 4) आत्म ख्याति
-

Ques # :8

according to samkhya system , what is the real nature of purusha -

- 1) agent and enjoyer
- 2) pure consciousness and witness
- 3) stream of consciousness
- 4) consciousness as necessary quality

साँख्य दर्शन के अनुसार पुरुष का वास्तविक स्वरूप क्या है -

- 1) कर्त्ता और भोक्ता
- 2) शुद्ध चैतन्य और साक्षी
- 3) चैतन्य प्रवाह
- 4) चैतन्य अनिवार्य गुण के रूप में

Ques # :9

which of the following is not a constituent of the method of vyapti establishment , according to nyaya system -

- 1) cause and effect - relation
- 2) anvaya
- 3) vyatirek
- 4) samanya lakshan pratyaksha

न्याय दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में से व्याप्ति स्थापना पद्धति का घटक नहीं है -

- 1) कार्य कारण सम्बन्ध का ज्ञान
- 2) अन्वय
- 3) व्यतिरेक
- 4) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष

Ques # :10

according to kumaril the knowledge of knowledge is -

- 1) through self illumination (swayam prakashana)
- 2) through implication (arthapatti)
- 3) through collection of immediate past knowledge (anuvyavsaya)
- 4) never known

कुमारिल के अनुसार ज्ञान का ज्ञान -

- 1) स्वयं प्रकाशक होता है
- 2) अर्थापत्ति द्वारा होता है
- 3) अनुव्यवसाय द्वारा होता है
- 4) कभी नहीं होता

Ques # :11

"the sky flower is fragrant because it is a flower , and all flowers are fragrant". which of the fallacy (hetvabasa) is committed in the above inference -

- 1) asiddha
- 2) satpratipaksha
- 3) savyabhichar
- 4) viruddha

"आकाश कुसुम सुगंधित है क्योंकि वह कुसुम है तथा समस्त कुसुम सुगंधित होते हैं |" उपर्युक्त अनुमान में कौनसा हेत्वामास है -

- 1) असिद्ध
- 2)

सत् प्रतिपक्ष

- 3) सव्यभिचार
 - 4) विरुद्ध
-

Ques # :12

according to jainism the cause of ontological error is -

- 1) gyanavarniya karma
- 2) name karma
- 3) mohaniya karma
- 4) antaraya karma

जैन दर्शन के अनुसार सत्तामीमांसीय भ्रम का कारण है -

- 1) ज्ञानवरणीय कर्म
 - 2) नाम कर्म
 - 3) मोहनीय कर्म
 - 4) अन्तराय कर्म
-

Ques # :13

according to ramanuja the relation between chit , achit and god is -

- 1) samavaya
- 2) sanyoga
- 3) bhokta - bhogya
- 4) aprithaksiddhi

रामानुज के अनुसार चित् अचित् एवं ईश्वर के मध्य -

- 1) समवाय सम्बन्ध है
 - 2) संयोग सम्बन्ध
 - 3) भोक्ता - भोग्य का सम्बन्ध है
 - 4) अपृथक्सिद्धि का सम्बन्ध है
-

Ques # :14

in plato's view , forms or ideas are -

- 1) do not have existence independent of their particulars .
- 2) arche types of which particulars belonging to the world of experience are copies .
- 3) concept which are formed from experience of particulars .
- 4) mere names which have no counter parts in reality .

प्लेटो के मत में आकार या प्रत्यय है -

- 1) विशेषों से स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखते |
 - 2) वे आदर्श रूप: व्यावहारिक जगत के विशेष पदार्थ जिनके प्रतिरूप हैं |
 - 3) विशेषों के अनुभव के आधार पर निर्मित सम्प्रत्यय हैं |
 - 4) नाममात्र , वास्तविक जगत में जिनके अनुरूप कोई पदार्थ नहीं है |
-

Ques # :15

"force , not extention is the essential property of the substance is a view held by -

- 1) descartes
- 2) newton
- 3) leibnitz

4) spinoza

"शक्ति , न कि विस्तार द्रव्य का सार गुण है | यह मत है -

- 1) देकार्त का
 - 2) न्यूटन का
 - 3) लाइबनिट्स का
 - 4) स्पिनोजा का
-

Ques # :16

descartes holds that the two methods of obtaining real knowledge are -

- 1) deduction and testimony
- 2) intuition and deduction
- 3) intuition and experience
- 4) deduction and experience

देकार्त मत में "यथार्थज्ञान की प्राप्ति" के दो साधन हैं -

- 1) निगमन एवं शब्द प्रमाण
 - 2) सहजज्ञान एवं निगमन
 - 3) सहजज्ञान एवं अनुभव
 - 4) निगमन एवं अनुभव
-

Ques # :17

"reality is a process of logical revolution (spiritual process) . who says -

- 1) locke
- 2) aristotle
- 3) kant
- 4) hegal

"सत् एक तार्किक विकास (आध्यात्मिक विकास) की प्रक्रिया है |" किसने कहा -

- 1) लॉक ने
 - 2) अरस्तू ने
 - 3) कांट ने
 - 4) हेगल ने
-

Ques # :18

"absolute idealism" subscribes to which one of the following views -

- 1) ultimate reality is entirely material
- 2) ultimate reality is both material and spiritual
- 3) ultimate reality is entirely spiritual
- 4) ultimate reality is uniquely non material and non spiritual

"निरपेक्ष प्रत्ययवाद" निम्नांकित में से किस एक मत का पोषक है -

- 1) मूलतत्त्व पूर्णत भौतिक हैं
 - 2) मूलतत्त्व भौतिक एवं चेतन दोनों हैं
 - 3) परमसत्ता पूर्णतः चेतन हैं
 - 4) मूलतत्त्व विलक्षण रूप से अ-भौतिक एवं अ-चेतन हैं
-

Ques # :19

aristotle holds that -

- 1) universals alone are substance
- 2) universals and particulars both are separate substance
- 3) particulars alone are substances
- 4) universals as immanent in particulars are substances

अरस्तू मत में -

- 1) केवल सामान्य ही द्रव्य है
- 2) सामान्य एवं विशेष दोनों ही पृथक द्रव्य है
- 3) केवल विशेष ही द्रव्य है
- 4) विशेषों में अन्तरवर्ती सामान्य ही द्रव्य है

Ques # :20

which philosopher has described the "god" as "natura-naturance" and "natura-naturata" -

- 1) hume
- 2) kant
- 3) spinoza
- 4) berkeley

किस दार्शनिक ने ईश्वर को "नेचुरा - नेचुरन्स (विश्वात्मरूप) और नेचुरा नेचुरेट (विश्वरूप)" से वर्णित किया है |

- 1) ह्यूम ने
- 2) कांट ने
- 3) स्पिनोजा ने
- 4) बर्कले ने

Ques # :21

according to leibnitz "monad" is not -

- 1) substance
- 2) windowless
- 3) extended object
- 4) unique in itself

लाइबनिट्स के अनुसार "मोनेड" नहीं है -

- 1) द्रव्य
- 2) गवाक्षहीन
- 3) विस्तारवान पदार्थ
- 4) अपने आप में अद्वितीय

Ques # :22

which of the following is locke's statement -

- 1) cogito , ergo sum;
- 2) ess est percipi;
- 3) all knowledge is recollection
- 4) mind is tabula rasa

निम्न में से लॉक का कथन है -

- 1) मैं सोचता हूँ, अतः मैं हूँ;
- 2) दृष्टि सृष्टि है ;
- 3) समस्त ज्ञान स्मरण है

4) मन एक सफेद पट्टी के समान है

Ques # :23

point out the steps of becoming according to hegel from the following -

- 1) being , truth and becoming
- 2) man , soul and being
- 3) god , man and being
- 4) thesis , anti-thesis and synthesis

हीगेल के मतानुसार विकास क्रम के तीन सोपान निम्न में से क्या हैं -

- 1) सत् तत्व , सत्य और विकास
 - 2) मनुष्य , आत्मा और सत् तत्व
 - 3) ईश्वर , मनुष्य और सत् तत्व
 - 4) वाद , प्रतिवाद और संवाद
-

Ques # :24

the author of "appearance and reality" is -

- 1) hegal
- 2) bradley
- 3) kant
- 4) locke

"आभास और सत्' के लेखक है -

- 1) हेगल
 - 2) ब्रेडले
 - 3) कांट
 - 4) लॉक
-

Ques # :25

according to "yoga" philosophy "chitta" is -

- 1) nature of jiva
- 2) pure consciousness
- 3) purush
- 4) effect of prakriti

योग दर्शन में "चित्" है -

- 1) जीव का स्वरूप
 - 2) शुद्ध चैतन्य
 - 3) पुरुष
 - 4) प्रकृति का विकार
-

Ques # :26

"consciousness is freedom" this is the view of -

- 1) sartra
- 2) hegal
- 3) kant
- 4) hume

"चेतना स्वतंत्रता है" यह मत है -

- 1) सार्त्र
 - 2) हेगल
 - 3) कांट
 - 4) ह्यूम
-

Ques # :27

"the meaning of a word is negative" this notion is given by -

- 1) shanta rakshit
- 2) kamal sheel
- 3) dharmkirti
- 4) ratnakirti

"शब्द का अर्थ निषेधात्मक है" यह मत दिया है -

- 1) शांतरक्षित
 - 2) कमलशील
 - 3) धर्मकीर्ति
 - 4) रत्नकीर्ति
-

Ques # :28

mind is a kind of theatre where several perceptions successively appear and pass away - who said it -

- 1) locke
- 2) kant
- 3) berkley
- 4) hume

"मनस एक प्रकार का थियेटर है , यहाँ अनेकों प्रत्यक्ष क्रमशः आते जाते हैं" यह कथन -

- 1) लॉक का है
 - 2) कांट का है
 - 3) बर्कले का है
 - 4) ह्यूम का है
-

Ques # :29

according to the charvaka system , vyapti cannot be established through inference because -

- 1) it is matter of perception
- 2) it is based on testimony
- 3) fallacy of interdependence
- 4) fallacy of contradiction

चार्वाक दर्शन के अनुसार व्याप्ति स्थापना अनुमान द्वारा संभव नहीं , क्योंकि -

- 1) प्रत्यक्ष का विषय है
 - 2) शब्द प्रमाण पर निर्भर है
 - 3) अन्योन्याश्रय का दोष है
 - 4) व्याघात नियम का दोष है
-

Ques # :30

"man is the measure of all things" who says -

- 1) socretes

- 2) plato
- 3) protagoras
- 4) aristotle

"मनुष्य ही सब वस्तुओं का मापदण्ड है" किसने कहा -

- 1) सुकरात
 - 2) प्लेटो
 - 3) प्रोटेगोरस
 - 4) अरस्तू
-

Ques # :31

according to purvamimansa the knowledge of "abhava" is through -

- 1) perception
- 2) inference
- 3) anupalabdhi
- 4) arthapatti

पूर्व मीमांसा के अनुसार अभाव का ज्ञान कराने वाला प्रमाण -

- 1) प्रत्यक्ष है
 - 2) अनुमान है
 - 3) अनुपलब्धि है
 - 4) अर्थापत्ति है
-

Ques # :32

according to nyaya system the fourth member of the five membered syllogism is -

- 1) upanaya
- 2) hetu
- 3) nigamana
- 4) udaharana

न्याय दर्शन के अनुसार पंचावयव - न्याय वाक्य का चौथा अवयव है -

- 1) उपनय
 - 2) हेतु
 - 3) निगमन
 - 4) उदाहरण
-

Ques # :33

what was the basis of the division of varna system according to gita -

- 1) guna and karma
- 2) caste
- 3) colour
- 4) economic

गीता के अनुसार वर्ण व्यवस्था का आधार क्या था -

- 1) गुण और कर्म
- 2) जाति
- 3) रंग
- 4) आर्थिक स्थिति

Ques # :34

the ashram related to rnaparishodh of pitra-rna and dev-rna is -

- 1) brahmacharya
- 2) sanyasa
- 3) vanaprastha
- 4) grihasth

पितृ और देव ऋणपरिशोध की अवधारणा से सम्बंधित आश्रम है -

- 1) ब्रह्मचर्य
- 2) संन्यास
- 3) वानप्रस्थ
- 4) गृहस्थ

Ques # :35

speaking truth is -

- 1) varna - dharma
- 2) ashram - dharma
- 3) vishes - dharma
- 4) sadharan - dharma

सत्य बोलना है -

- 1) वर्णधर्म है
- 2) आश्रम धर्म है
- 3) विशेष धर्म है
- 4) साधारणधर्म है

Ques # :36

"vishesa - dharma" is determined by one's -

- 1) varna alone
- 2) ashrama alone
- 3) varna - ashram
- 4) religion

"विशेष - धर्म" का निर्धारण -

- 1) केवल वर्ण से होता है
- 2) केवल आश्रम से होता है
- 3) वर्ण - आश्रम से होता है
- 4) धर्म - सम्प्रदाय से होता है

Ques # :37

aristotle believed that -

- 1) virtues are innate
- 2) virtues are given by god
- 3) virtues are acquired through continuous practice
- 4) virtues are given by society

अरस्तू का विश्वास था -

- 1) सद्गुण जन्मजात होते हैं
- 2)

सद्गुण ईश्वर प्रदत्त है

- 3) सद्गुण निरंतर अभ्यास द्वारा अर्जित किये जाते हैं
 - 4) सद्गुण समाज द्वारा प्रदत्त है
-

Ques # :38

the aim of meta-ethics is -

- 1) to establish moral principles or ideas
- 2) to analyse the nature and meaning of moral terms and judgements
- 3) to describe the nature of god
- 4) to describe human emotions

अधिनीति शास्त्र का उद्देश्य है -

- 1) नैतिक सिद्धांतों या आदर्शों की स्थापना करना
 - 2) नैतिक निर्णयों एवं नैतिक पदों के स्वरूप व अर्थ का विश्लेषण करना
 - 3) ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करना
 - 4) संवेगों का वर्णन करना
-

Ques # :39

the postulates of morality , according to kant are -

- 1) freedom of will , existence of god and voluntary action
- 2) freedom of will , immortality of soul and voluntary action
- 3) existence of god , immortality of soul and reason
- 4) freedom of will , existence of god and immortality of soul

कांट के अनुसार नैतिकता की तीन पूर्वमान्यताएँ हैं -

- 1) संकल्प की स्वतंत्रता , ईश्वर का अस्तित्व एवं एच्छिक कर्म
 - 2) संकल्प की स्वतंत्रता , आत्मा की अमरता एवं एच्छिक कर्म
 - 3) ईश्वर का अस्तित्व , आत्मा की अमरता और तर्कबुद्धि
 - 4) संकल्प की स्वतंत्रता , ईश्वर का अस्तित्व और आत्मा की अमरता
-

Ques # :40

according to moore naturalistic fallacy is -

- 1) natural phenomena are not good
- 2) to define moral terms in terms of natural qualities
- 3) to define moral terms in terms of morals
- 4) nature is not rational

"मूर" के अनुसार प्रकृतिवादी तर्कदोष है -

- 1) प्राकृतिक सत्तायें शुभ नहीं हैं
 - 2) नैतिक पदों की परिभाषा प्राकृतिक गुणों द्वारा करना
 - 3) नैतिक पदों की परिभाषा नैतिक पदों द्वारा करना
 - 4) प्रकृति बौद्धिक नहीं है
-

Ques # :41

- (p & q) ≡ (-p v - q)

This is -

- 1) distribution
- 2) de morgan's law

- 3) material implication
- 4) commutation

$$\neg (p \& q) \equiv (\neg p \vee \neg q)$$

यह है -

- 1) वियोजन
 - 2) डी मार्गन का नियम
 - 3) शाब्दिक प्रतिपत्ति
 - 4) विनिमय
-

Ques # :42

which factor in bentham's "hedonistic calculus" distinguish his theory from egoistic hedonism -

- 1) propinquity
- 2) fecundity
- 3) extention
- 4) purity

बैंथम के "सुखवादी गणक" का कौनसा तत्व है जो उसके सिद्धांत को स्वार्थवादी सुखवाद से भिन्न करता है -

- 1) निकटता
 - 2) उत्पादकता
 - 3) विस्तार
 - 4) शुद्धता
-

Ques # :43

mill's utilitarianism differs from bentham's because he admits - the difference in -

- 1) the intensity of pleasures
- 2) the duration of pleasures
- 3) the certainty of pleasures
- 4) the quality of pleasures

मिल का उपयोगितावाद बैंथम से इस अर्थ में भिन्न है कि यह -

- 1) सुखों की तीव्रता में भेद मापता है
 - 2) सुखों की अवधि में भेद मापता है
 - 3) सुखों की निश्चितता में भेद मापता है
 - 4) सुखों में गुणात्मक भेद मापता है
-

Ques # :44

according sidgwick "in the world , pleasure alone is known intrinsically good and desirable" through -

- 1) sense experience
- 2) tradition
- 3) intuition
- 4) public opinion

सिजंविक् के अनुसार "जगत में केवल सुख ही स्वतः शुभ और वांछनीय है" इसका ज्ञान हमें -

- 1) इन्द्रिय अनुभव से होता है
 - 2) परम्परा से होता है
 - 3) अंतःप्रज्ञा से होता है
 - 4) लोकमत से होता है
-

Ques # :45

kant's "categorical imperative" is a -

- 1) conditional and universal command
- 2) unconditional and universal command
- 3) conditional and assestorial command
- 4) unconditional and non-universal command

"कांट का निरपेक्ष आदेश" एक -

- 1) सौपाधिक एवं सार्वभौमिक आदेश है
 - 2) निरुपाधिक एवं सार्वभौमिक आदेश है
 - 3) सौपाधिक एवं स्वाग्रही समादेश है
 - 4) निरुपाधिक एवं असार्वभौमिक आदेश है
-

Ques # :46

we can not hold a kleptomanial responsibility for stealing because -

- 1) he is a habitual offenders
- 2) he steals out of need
- 3) steals under external pressure
- 4) he suffers from psychological disease and needs treatment

हम चौयोन्यादी को चोरी के लिये उत्तरदायी नहीं ठहरा सकते क्योंकि -

- 1) वह आदतन अपराधी है
 - 2) वह आवश्यकता की पूर्ति के लिए चोरी करता है
 - 3) वह बाद्द दबाव में चोरी करता है
 - 4) वह मानसिक रोग से पीड़ित हैं और उसे उपचार की आवश्यकता है
-

Ques # :47

the school of indian philosophy which accepts karmavada and permanent soul substance , but denies the existence of god , is -

- 1) charvaka
- 2) buddhism
- 3) jainism
- 4) nyaya

भारतीय दर्शन का वह मत जो कर्मवाद और स्थायी आत्म द्रव्य स्वीकार करता है , किन्तु ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं करता , है -

- 1) चार्वाक
 - 2) बौद्ध दर्शन
 - 3) जैन दर्शन
 - 4) न्याय दर्शन
-

Ques # :48

the school of indian philosophy according to which the empirical world is ultimately unreal , is -

- 1) advait vedant
- 2) purva mimansa
- 3) samkhya
- 4) vishishtadvaitvedant

भारतीय दर्शन का वह मत जिसके अनुसार आनुभविक जगत् अन्ततोगत्वा असत् है -

- 1) अद्वैत वेदान्त
 - 2) पूर्व मीमांसा
 - 3) सांख्य
 - 4) विशिष्टाद्वैत वेदान्त
-

Ques # :49

according to the vaisheshika view atoms arekaran of creation .

- 1) upadan karan
- 2) samvayee karan
- 3) asamvayee karan
- 4) nimitt karan

वैशेषिक मतानुसार परमाणु सृष्टि के -

- 1) उपादान कारण है
 - 2) समवायी कारण है
 - 3) असमवायी कारण है
 - 4) निमित्त कारण है
-

Ques # :50

according to vaisheshika view -

- 1) guna and karma depend upon dravya for their existence .
- 2) guna and karma are independent padarthas therefore not related with dravya in any way .
- 3) gunas inhere in dravya therefore they are material and pleasure , pain and desire are not their kinds
- 4) karmas do not inhere in dravya because akash , dik , kala and self are static

वैशेषिक मतानुसार -

- 1) गुण तथा कर्म अपने अस्तित्व के लिए द्रव्य पर आश्रित हैं।
 - 2) गुण तथा कर्म स्वतंत्र पदार्थ हैं अतः द्रव्य से किसी भी प्रकार से सम्बंधित नहीं हैं।
 - 3) गुण द्रव्य में रहते हैं अतः जड़ है और सुख , दुख और इच्छा गुण के प्रकार नहीं हैं।
 - 4) कर्म द्रव्यों में नहीं क्योंकि आकाश , दिक् , काल और आत्मा गतिहीन हैं।
-

Ques # :51

a theory of causation according to which the effect is latently existent in its material cause , prior to its production , is called -

- 1) asatkaryavada
- 2) satkaryavada
- 3) asadkaranvada
- 4) arambhavada

कारणता का वह सिद्धांत जिसके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपने उपादान कारण में अव्यक्त रूप से अस्तित्वमान रहता है , कहलाता है -

- 1) असत्कार्यवाद
 - 2) सत्कार्यवाद
 - 3) असद्कारणवाद
 - 4) आरम्भवाद
-

Ques # :52

according to nyaya - vaisheshika view -

- 1) dik and akash are not different from each other
- 2) dik and akash are different but both are substratum of quality of sound
- 3) dik is ground of cognition of far and near and akash is substratum of quality of sound
- 4) akash is ground of cognition of far and near and dik is substratum of quality of sound

न्याय वैशेषिक मत है -

- 1) दिक् एवं आकाश अभिन्न है
- 2) दिक् एवं आकाश भिन्न है किन्तु दोनों ही शब्द गुण के आधार है
- 3) दिक् दूर एवं निकट के ज्ञान का आधार है तथा आकाश शब्द गुण का आधार है
- 4) आकाश दूर एवं निकट के ज्ञान का आधार है जबकि दिक् शब्द गुण का आधार है

Ques # :53

according to aristotle god is world's -

- 1) formal , final and efficient cause
- 2) material , efficient and final cause
- 3) creator , provider and destroyer
- 4) material , and efficient cause

अरस्तू के अनुसार ईश्वर जगत का -

- 1) स्वरूप , लक्ष्य और निमित्त कारण है |
- 2) उपादान , निमित्त और लक्ष्य कारण है |
- 3) सृष्टिकर्ता , पालक और संहारक है |
- 4) उपादान और निमित्त कारण है |

Ques # :54

philosopher who has challenged the concept of causation and considered the notion of causation as grounded in customs and habits , is -

- 1) aristotle
- 2) leibnitz
- 3) hume
- 4) berkeley

कारणता की अवधारणा को चुनौती देने वाला तथा कारणता की धारणा को रिवाज एवं आदत पर आश्रित मानने वाला दार्शनिक है -

- 1) अरस्तू
- 2) लाइबनिट्स
- 3) ह्यूम
- 4) बर्केले

Ques # :55

according to kant , space and time are -

- 1) the ultimate realities
- 2) apriori forms of sensibility
- 3) insignificant for the knowledge of the phenomenal world
- 4) characteristics of the noumena

कांट के अनुसार देश तथा काल हैं -

- 1) निरपेक्ष सत्ताएं
- 2) संवेदना के प्रागानुभाविक आकार

- 3) प्रपंचात्मक जगत के ज्ञान की दृष्टि से महत्त्वहीन
 - 4) नोमिना के चारित्रिक लक्षण
-

Ques # :56

in the philosophy of descartes "interactionism" is necessary to explain -

- 1) relation of god and the world
- 2) relation of mind and body
- 3) "i think , therefore i am"
- 4) relation of god and soul

देकार्त के दर्शन में "अन्तर्क्रियावाद" आवश्यक है -

- 1) ईश्वर और जगत के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए
 - 2) मनस और शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए
 - 3) "मैं सोचता हूँ अतः मैं हूँ" की व्याख्या के लिए
 - 4) ईश्वर और आत्मा के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए
-

Ques # :57

the causal proof for the existence of god , as employed by descartes , asserts that god must exist -

- 1) as the cause of the universe of pluralities
- 2) as cause of the goodness in the world
- 3) as cause of the idea of god in human mind
- 4) because of perfection cannot be devoid of existence

देकार्त द्वारा ईश्वर के अस्तित्व हेतु प्रयुक्त कारण मूलक प्रमाण की यह मान्यता है कि ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है

-
- 1) नानत्व पूर्ण सृष्टि के कारण के रूप में
 - 2) जगत में शुभत्व के कारण के रूप में
 - 3) मानव मन में विद्यमान ईश्वर के प्रत्यय के कारण के रूप में
 - 4) क्योंकि पूर्णत्व में अस्तित्व का अभाव नहीं हो सकता
-

Ques # :58

which of the following is not acceptable to spinoza -

- 1) god is the only substance and therefore whatever exists that is god
- 2) thought and extension are the two essential attributes of god
- 3) attributes of god are infinite
- 4) thought and extension influences each other

निम्नलिखित में से क्या स्पिनोज़ा को स्वीकार्य नहीं है -

- 1) ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है |इसलिए जो भी अस्तित्ववान है वह ईश्वर है |
 - 2) विचार और विस्तार ईश्वर के दो सार गुण हैं |
 - 3) ईश्वर के अनन्त गुण हैं |
 - 4) विचार और विस्तार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं |
-

Ques # :59

kant's stand that "noumena cannot be known" , means -

- 1) noumena does not exist , because to be is to be perceived
- 2) our knowledge is limited to phenomena in space and time . noumena a beyond space and time as the ground of phenomena

- 3) we must accept skepticism , because certain knowledge of the ultimate reality is not possible
- 4) noumena being beyond space and time can be known not by senses , but by reason

"नोमिना का ज्ञान संभव नहीं है , कांट की इस मान्यता का अभिप्राय है -

- 1) नोमिना की सत्ता नहीं है , क्योंकि सत्ता दृश्यता है
- 2) हमारा ज्ञान देश और काल में अवस्थित प्रपंच तक सीमित है | नोमीना प्रपंच का देशकालातीत आधार है
- 3) हमें संशयवाद स्वीकार कर लेना चाहिए क्योंकि अंतिम सत्ता का निश्चित ज्ञान संभव नहीं है
- 4) देशकालातीत होने के कारण नोमीना का ज्ञान इन्द्रियों का नहीं अपितु बुद्धि का विषय है

Ques # :60

"inconsistent empiricism" means -

- 1) all empiricism is inconsistent empiricism
- 2) if there is an inconsistency , it is due to empiricism
- 3) accepting certain assumptions and explanations from sources other than experiences
- 4) different experiences of same objects in different conditions

"असंगत अनुभववाद" का अर्थ है -

- 1) समस्त अनुभववाद असंगत अनुभववाद है
- 2) यदि असंगतता है तो उसका कारण अनुभववाद है
- 3) कुछ मान्यताओं और व्याख्याओं को अनुभव से भिन्न किसी अन्य स्रोत पर आधारित करना
- 4) एक ही विषय का भिन्न परिस्थितियों में भिन्न - भिन्न अनुभव होना

Ques # :61

according to jainism meaning of the word "syat" is -

- 1) a certain standpoint
- 2) doubt
- 3) possibility
- 4) personal belief

जैन दर्शन के अनुसार 'स्यात्' शब्द का अर्थ है

- 1) एक निश्चित अपेक्षा (परिपेक्ष्य)
- 2) संशय
- 3) सम्भवतया
- 4) व्यक्तिगत विश्वास

Ques # :62

"anupurvi" is a mimansa's principle according to which -

- 1) god is the creator of vedas
- 2) meaning of the words is determined by their conventional use
- 3) the words are eternal and their order in the vedas is also eternal
- 4) the words and their meanings have no necessary relation

'आनुपूर्वी' एक मीमांसक सिद्धांत है, जिसके अनुसार

- 1) ईश्वर वेदों का सृष्टा है
 - 2) शब्दों के अर्थ उनके परम्परागत प्रयोग द्वारा निर्धारित होते हैं |
 - 3) शब्द शाश्वत हैं तथा वेदों में उनका क्रम भी शाश्वत है
 - 4) शब्दों और उनके अर्थों के मध्य कोई अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है
-

Ques # :63

knower , known and the knowledge each is an object of every knowledge . this view is held by -

- 1) kumaril
- 2) prabhakar
- 3) bauddhist vigyanvadi
- 4) nyaya

ज्ञाता, ज्ञेय ओर ज्ञान प्रत्येक ज्ञान का विषय है, यह मत है -

- 1) कुमारिल
- 2) प्रभाकर
- 3) बौद्ध विज्ञानवादी
- 4) न्याय

Ques # :64

all knowledge is neutral at the time of the origin and it is validated or invalidated by successful or unsuccessful subsequent activity , is a view held by -

- 1) buddhists
- 2) naiyayikas
- 3) mimamsakas
- 4) samkhyan

अपनी उत्पत्ति के समय समस्त ज्ञान उदासीन होता है तथा प्रामाण्य अथवा अप्रामाण्य का निर्धारण कार्य की सफलता या असफलता के आधार पर होता है | यह मत है |

- 1) बौद्ध
- 2) नैयायिक
- 3) मीमांसक
- 4) सांख्य

Ques # :65

intrinsic validity and extrinsic invalidity of knowledge is held by -

- 1) bhatt mimansaka
- 2) early naiyayikas
- 3) buddhists
- 4) navya naiyayikas

स्वतः प्रामाण्य और परतः अप्रामाण्यवाद का सिद्धांत मान्य है

- 1) भट्ट मीमांसकों को
- 2) प्राचीन नैयायिकों को
- 3) बौद्धों को
- 4) नव्य नैयायिकों को

Ques # :66

illusary experience explained by way of smrtipramosha and vivekagrah is called -

- 1) anyathakhyativada
- 2) akhyativada
- 3) asatkhyativada
- 4) atmakhyativada

स्मृतिप्रमोष तथा विवेकाग्रह के माध्यम से भ्रम की व्याख्या करने वाला सिद्धांत है

- 1)

अन्यथाख्यातिवाद

- 2) अख्यातिवाद
 - 3) असदख्यातिवाद
 - 4) आत्मख्यातिवाद
-

Ques # :67

advaita vedanta's theory of error is called as -

- 1) vipritakhyativada
- 2) satkhyativada
- 3) anirvachniyakhyativada
- 4) vivekkhyativada

अद्वैत वेदांत का भ्रम का सिद्धांत कहलाता है -

- 1) विपरीतख्यातिवाद
 - 2) सत्ख्यातिवाद
 - 3) अनिर्वचनीयख्यातिवाद
 - 4) विवेकख्यातिवाद
-

Ques # :68

according to mimamsa , "arthapatti" (presumption) pramana is -

- 1) a variant of anumana pramana
- 2) necessary praman to resolve appearant inconsistency between two known facts
- 3) a replacement of sabda pramana
- 4) necessary to establish vyapti relation between two things

मीमांसा मतानुसार 'अर्थापत्ति' प्रमाण है

- 1) अनुमान प्रमाण का एक प्रकार
 - 2) दो ज्ञात तथ्यों के मध्य प्रतीत होने वाली असंगति का निराकरण करने वाला प्रमाण
 - 3) शब्द प्रमाण के स्थान पर स्वीकृत
 - 4) दो वस्तुओं के मध्य व्याप्ति सम्बन्ध की स्थापना हेतु आवश्यक
-

Ques # :69

"arthakriyakaritva - laksanam sat" means -

- 1) universals are real because their meaning is their effect
- 2) there are effects without causes
- 3) the criterion of existence of a thing in its ability to produce some effect
- 4) reality is unconditional , eternal and describable

'अर्थाक्रियाकारित्व - लक्षणं सत्' का अर्थ है

- 1) सामान्यों की सत्ता है क्योंकि उका अर्थ उनका प्रभाव है |
 - 2) कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर नहीं है |
 - 3) वस्तु की सत्ता का लक्षण उस वस्तु में कार्य उत्पन्न करने का सामर्थ्य है |
 - 4) सत्ता निरपेक्ष, शाश्वत और वर्णनीय है
-

Ques # :70

a theory of meaning according to which , words independently express separate meanings and their use in a sentence expresses a connected idea , is called -

- 1) anvitabhidhanavada
- 2) shabdashasvatvada
- 3) abhihitanvayavada
- 4) arthakriyavada

अर्थ का वह सिद्धांत जिसके अनुसार शब्द स्वतंत्र रूप से प्रथक अर्थ प्रकट करते हैं तथा जब इन शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त किया जाता है तो संयुक्त अर्थ प्रस्तुत होता है, कहलाता है

- 1) अन्विताभिधानवाद
- 2) शब्दशाश्वतवाद
- 3) अभिहितान्वयवाद
- 4) अर्थक्रियावाद

Ques # :71

the meaning of word is determined by its use in a sentence . this view of meaning is in held by -

- 1) kumaril bhatta
- 2) prabhakar
- 3) prabhakar and kumaril
- 4) kumaril and nyaya

शब्द का अर्थ, वाक्य में उसकी प्रयुक्ति पर निर्भर करता है | अर्थ के इस मत को मानने वाले हैं

- 1) कुमारिल भट्ट
- 2) प्रभाकर
- 3) प्रभाकर तथा कुमारिल
- 4) कुमारिल तथा न्याय

Ques # :72

according to nyaya , which of the following is not a condition for intelligible sentence -

- 1) akanksa (expectancy)
- 2) tatparya (intended meaning)
- 3) adesa (imperative)
- 4) yogyata (mutual fitness of words)

न्याय मतानुसार निम्नलिखित में से क्या वाक्य के अर्थपूर्ण होने की आवश्यक शर्त नहीं है

- 1) आकांक्षा
- 2) तात्पर्य
- 3) आदेश
- 4) योग्यता

Ques # :73

all is flux and nothing is permanent . this view is expressed by -

- 1) parmenides
- 2) zeno
- 3) heraclitus
- 4) anaxagoras

सबकुछ प्रवाहमान है और कुछ भी स्थायी नहीं है | यह मत व्यक्त किया है

- 1) पारमेनाइडीज़
- 2) जीनों ने
- 3) हेराक्लाइटस ने

4) एनेक्सागोरस ने

Ques # :74

"yogah karmasu kausalam" is propounded in -

- 1) yoga - sutra of patanjali
- 2) yogacharya system
- 3) bhagavadgita
- 4) yoga - bhasya

'योगः कर्मसु कौशलम्' प्रतिपादित है

- 1) पतंजलि योग - सूत्र में
 - 2) योगाचार मत में
 - 3) भगवद्गीता में
 - 4) योग - भाष्य में
-

Ques # :75

according to socrates , knowledge is -

- 1) not a virtue
- 2) not necessary for virtue
- 3) sometimes necessary for virtue
- 4) necessary and sufficient condition for virtue

सुकरात के अनुसार, ज्ञान

- 1) सद्गुण नहीं है |
 - 2) सद्गुण हेतु आवश्यक नहीं है |
 - 3) सद्गुण हेतु यदा-कदा आवश्यक होता है |
 - 4) सद्गुण की आवश्यक और पर्याप्त शर्त है |
-

Ques # :76

according to descartes , the idea of god which exists in knowers mind is not -

- 1) innate
- 2) absolutely clear and distinct
- 3) a construct of reason
- 4) caused by god himself

देकार्त के अनुसार ज्ञान के मनस में विद्यमान ईश्वर का प्रत्यय नहीं है

- 1) सहजात
 - 2) पूर्णतया स्पष्ट एवं सुभिन्न
 - 3) बुद्धि द्वारा निर्मित
 - 4) स्वयं ईश्वर द्वारा किया गया कार्य
-

Ques # :77

pragmatic criterion of truth suggests -

- 1) truth is subjective
- 2) truth is that which works
- 3) no truth can ever be taken as objective
- 4) truth is universal and unchanging

सत्य की प्रयोजनवादी (प्रेगमेटिक) कसौटी द्वारा समर्थित है

- 1) सत्य आत्मनिष्ठ है
- 2) सत्य वह है जो कार्यसाधक है
- 3) कोई भी सत्य कभी भी वस्तुनिष्ठ स्वीकार नहीं किया जा सकता
- 4) सत्य सार्वभौम एवं अपरिवर्तनशील है

Ques # :78

the correspondence theory of truth pre-supposes -

- 1) the object of knowledge is independent of knower
- 2) the known is dependent on knower
- 3) there are no realities of any kind
- 4) there are realities but truth is independent of them

सत्य के संवादिता सिद्धांत की पूर्वमान्यता है

- 1) ज्ञान का विषय ज्ञाता से स्वतंत्र है
- 2) ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता पर आश्रित है
- 3) किसी भी प्रकार की कोई भी सत्ता नहीं है
- 4) सत्ताएँ हैं किन्तु सत्य उनसे पूर्णतया स्वतंत्र है

Ques # :79

the verifiability principle is adopted as the criterion of meaning by -

- 1) bertrend russell
- 2) g.e. moor
- 3) rudolph carnap
- 4) william james

सत्यापनीयता सिद्धांत को अर्थ की कसौटी स्वीकार करने वाले हैं

- 1) बर्ट्रेण्ड रसल
- 2) जी. ई. मूर
- 3) रूडोल्फ कार्नेप
- 4) विलियम जेम्स

Ques # :80

philosopher associated with the "theory of falsifiability" is -

- 1) william james
- 2) karl popper
- 3) j.l. austin
- 4) karl marx

'असत्यापनीयता सिद्धांत' से सम्बन्धित दार्शनिक है

- 1) विलियम जेम्स
- 2) कार्ल पॉपर
- 3) जे. एल. ऑस्टिन
- 4) कार्ल मार्क्स

Ques # :81

according to nyaya theory of sense-object contact , the contact of sense with qualities through things , is called

-

- 1) samyoga
- 2) samyukta samvaya
- 3) visesanavisesyabhava
- 4) samyukta samveta samvaya

न्याय दर्शन के इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष सिद्धांत के अनुसार इन्द्रिय का द्रव्य के माध्यम से उसके गुण के साथ सम्पर्क, कहलाता है

- 1) संयोग
- 2) संयुक्त समवाय
- 3) विशेषणविशेष्याभाव
- 4) संयुक्त समवेत समवाय

Ques # :82

"kalpanapodhabhramtam pratyaksham". this definition of perception is given by -

- 1) nyaya
- 2) samkhya
- 3) buddhism
- 4) mimamsa

'कल्पनापोढमभ्रान्तम प्रत्यक्षम्' की यह परिभाषा दी गई है

- 1) न्याय दर्शन में
- 2) सांख्य दर्शन में
- 3) बौद्ध दर्शन में
- 4) मीमांसा दर्शन में

Ques # :83

which of the following terms is not a constituent of the definition of perception given by gotama nyaya sutra -

- 1) avyapadesya
- 2) vyavsayatmaka
- 3) namjatyadyadiasanyukata
- 4) avyabhichari

निम्नलिखित में से कौनसा पद गौतम के न्याय सूत्र द्वारा प्रस्तुत प्रत्यक्ष की परिभाषा का घटक नहीं है

- 1) अव्यपदेश
- 2) व्यवसायात्मक
- 3) नामजात्यादिअसंयुक्तता
- 4) अव्यभिचारी

Ques # :84

according to nyaya "sheshavat anumana" is -

- 1) inference of cause from the effect
- 2) inference of effect from the cause
- 3) not based on cause and effect relation
- 4) not based on vyapti relation

न्याय दर्शन के अनुसार "शेषवत् अनुमान"

- 1) कार्य से कारण का अनुमान है
- 2) कारण से कार्य का अनुमान है

- 3) कार्य - कारण सम्बन्ध पर आधारित नहीं है
 - 4) व्याप्ति सम्बन्ध पर आधारित नहीं है
-

Ques # :85

which in that hetu is virrudha "hetvabhasa" from inference .

- 1) sadhya is not proved certainly
- 2) hetu does not prove sadhya but prove its absence
- 3) in which conclusion is contradicted by another inference
- 4) in which conclusion is contradicted by pratyaksha praman or other then anumana

वह हेतु विरुद्ध 'हेत्वाभास' कहलाता है जिसके द्वारा अनुमान में

- 1) साध्य की सिद्धि निश्चित रूप से नहीं होती
 - 2) हेतु साध्य को नहीं वरन् साध्य के अभाव को सिद्ध करता है।
 - 3) विद्यमान साध्य का अन्य अनुमान द्वारा खण्डन हो जाता है
 - 4) साध्य का खण्डन प्रत्यक्ष अथवा किसी अन्य अनुमानेतर प्रमाण द्वारा हो जाता है
-

Ques # :86

the eternal and inexorable order called rta -

- 1) does not apply to devatas as they are its guardians
- 2) applies only to devtas as they alone are perfect moral beings
- 3) does not apply to the physical world
- 4) is a cosmic natural moral order and applies to everything

ऋत् कही जाने वाली शाश्वत एवं अलंघ्य व्यवस्था

- 1) देवताओं पर लागू नहीं है क्योंकि वाह उसके संरक्षक है
 - 2) केवल देवताओं पर ही लागू है क्योंकि वाही पूर्णतया नैतिक है
 - 3) भौतिक जगत् पर लागू नहीं है
 - 4) एक ब्रह्माण्डीय प्राकृतिक नैतिक व्यवस्था है जो समस्त चराचर पर लागू है।
-

Ques # :87

the concept of trivarga excludes the purusartha -

- 1) dharma
- 2) artha
- 3) kama
- 4) moksa

पुरुवार्थ जो त्रिवर्ग में सम्मिलित नहीं है

- 1) धर्म
 - 2) अर्थ
 - 3) काम
 - 4) मोक्ष
-

Ques # :88

niskamakarma means -

- 1) renunciation of action but desire for fruits
- 2) renunciation of fruits of action
- 3) renunciation of desire for fruits of action
- 4) renunciation of all actions as they are all meaningless

निष्कामकर्म का अर्थ है

- 1) फल की इच्छा रखते हुए, कर्मों का त्याग
 - 2) कर्म के फलों का त्याग
 - 3) कर्म फल की इच्छा का त्याग पूर्वक कर्तव्यपालन
 - 4) समस्त कर्मों का त्याग क्योंकि समस्त कर्म अर्थहीन हैं।
-

Ques # :89

virtues have been classified into moral virtues and intellectual virtues by -

- 1) aristotle
- 2) socrates
- 3) mill
- 4) sidgwick

सद्गुणों को नैतिक सद्गुण और बौद्धिक सद्गुण में वर्गीकृत करने वाला है

- 1) अरस्तु
 - 2) सुकरात
 - 3) मिल
 - 4) सिजविक
-

Ques # :90

emotivism is a kind of -

- 1) ethical cognitivism
- 2) ethical non - cognitivism
- 3) ethical realism
- 4) ethical consequentialism

संवेगवाद है एक प्रकार का

- 1) नैतिक संज्ञानवाद
 - 2) नैतिक असंज्ञानवाद
 - 3) नैतिक वास्तववाद
 - 4) नैतिक परिणामवाद
-

Ques # :91

the conversion of "all mothers are women" is -

- 1) all women are mothers
- 2) some women are mothers
- 3) no women are mothers
- 4) some women are not mothers

'सभी माताएं स्त्रियां हैं' का परिवर्तन है

- 1) सभी स्त्रियां माताएं हैं
 - 2) कुछ स्त्रियां माताएं हैं
 - 3) कोई स्त्रियां माताएं नहीं हैं
 - 4) कुछ स्त्रियां माताएं नहीं हैं
-

Ques # :92

in a standard form categorical syllogism the fallacy of undistributed middle term arises only when -

- 1) middle term is not distributed in the conclusion
- 2) there is no middle term in the syllogism
- 3) middle term is not distributed in at least one of the premisses
- 4) minor term is distributed in any of the premisses

मानक आकार निरपेक्ष न्याय वाक्य में अव्याप्त मध्यम पद का तर्कदोष केवल तब उत्पन्न होता है, जब -

- 1) मध्यम पद निष्कर्ष में व्याप्त न हो
- 2) न्याय वाक्य में मध्यम पद न हो
- 3) मध्यम पद कम से कम एक आधार वाक्य में व्याप्त न हो
- 4) अमुख्य पद किसी भी आधार वाक्य में व्याप्त हो

Ques # :93

which of the following is not correct about valid standard form categorical syllogism -

- 1) it has three propositions only
- 2) all its propositions have only two terms each
- 3) there are only three terms in a syllogism
- 4) middle term is present in all the proposition of syllogism

वैध मानक आकार निरपेक्ष न्याय वाक्य के विषय में क्या सही नहीं है

- 1) इसमें केवल तीन ही तर्कवाक्य होते हैं
- 2) इसके प्रत्येक तर्कवाक्य में केवल दो पद होते हैं
- 3) न्याय वाक्य में केवल तीन ही पद होते हैं
- 4) न्यायवाक्य के समस्त तर्कवाक्यों में मध्यम पद उपस्थित रहता है

Ques # :94

Which of the following is not logically equivalent to $P \rightarrow \neg Q$

- 1) $\neg P \vee \neg Q$
- 2) $\neg (P \& Q)$
- 3) $\neg Q \vee \neg P$
- 4) $\neg (P \& \neg Q)$

निम्नलिखित में से कौनसा $p \rightarrow \neg q$ की

तार्किक समानता नहीं है

- 1) $\neg p \vee \neg q$
- 2) $\neg (p \& q)$
- 3) $\neg q \vee \neg p$
- 4) $\neg (p \& \neg q)$

Ques # :95

"no philosophers are cunning" , is correctly symbolized as -

- 1) (x) (px \rightarrow cx)
- 2) (x) (px \rightarrow \neg cx)
- 3) (x) (px & cx)
- 4) (\exists x) (Px & \neg Cx)

'कोई दार्शनिक चालाक नहीं हैं, का सही प्रतीकात्मक रूप है

- 1) $(x) (px \rightarrow cx)$
- 2) $(x) (px \rightarrow -cx)$
- 3) $(x) (px \& cx)$
- 4) $(\exists x) (Px \& -Cx)$

Ques # :96

the process of arriving at general or universal proposition from the facts of experience is called -

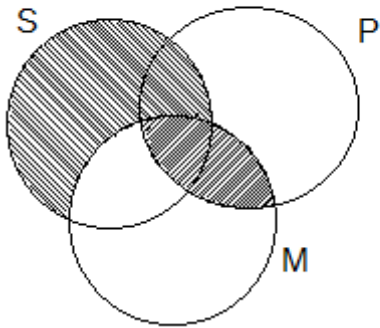
- 1) deduction
- 2) analogy
- 3) inductive generalization
- 4) empirical verification

आनुभविक तथ्यों के आधार पर सामान्य अथवा सार्वभौम प्रतिज्ञप्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया कहलाती है

- 1) निगमन
- 2) साम्यानुमान
- 3) आगमनात्मक सामान्यीकरण
- 4) आनुभविक सत्यापन

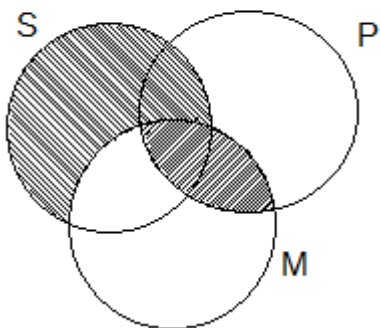
Ques # :97

This Venn diagram does not show



- 1) all s is m
- 2) no s is m
- 3) no m is p
- 4) no s is p

यह वैन आरेख नहीं दर्शाता है



- 1) सभी s m हैं
- 2) कोई s , m नहीं है
- 3) कोई m , p नहीं है
- 4) कोई s, p नहीं है

Ques # :98

which school of philosophy upholds "gyanam swahparbhasi" ?

- 1) buddha school
- 2) nyaya school
- 3) vedanta school
- 4) jain school

'ज्ञानं स्वःपरभासी' (ज्ञान स्वयं का एवं अन्य का प्रकाशन करता है) यह मान्यता है :-

- 1) बौद्ध दर्शा की
- 2) न्याय दर्शन की
- 3) वेदांत दर्शन की
- 4) जैनदर्शन की

Ques # :99

it is necessary to accept "vyavaharik satta" because -

- 1) day-to-day life in the world not possible
- 2) it is necessary to obtain grace of god
- 3) "paramarthik satta" depends on it
- 4) practicality is skillfulness

'व्यावहरिक सत्ता' को स्वीकार करना आवश्यक है क्योंकि

- 1) इसके बिना दैनिक जीवन या लोक व्यवहार संभव नहीं |
- 2) ईश्वर की कृपा पाने के लिए आवश्यक है
- 3) 'पारमार्थिक सत्ता' इसी पर आधारित है
- 4) व्यवहारिकता ही कुशलता है

Ques # :100

when the object of one sense is grasped by another sense then the perception , received in this way , is called -

- 1) samanya lakshana pratyaksha
- 2) yogaj pratyaksha
- 3) pratyabhigya
- 4) gyan lakshana pratyaksha

जब एक इंद्रिय के विषय का दूसरी इंद्रिय द्वारा ग्रहण कर लिया जाए तो इस प्रकार के प्रत्यक्ष को कहा जाता है -

- 1) सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष
- 2) योगज प्रत्यक्ष
- 3) प्रत्यभिज्ञा
- 4) ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष

Ques # :101

"vivartvada" is a kind of "satkaryavada". in this kind , a cause :

- 1) converts into effect
- 2) appears to be converted into effect
- 3) remains a cause
- 4) gets perished as soon as effect is perished

"विवर्तवाद" "सत्कार्यवाद" का एक प्रकार है | इसमें कारण -

- 1) कार्य में बदल जाता है

- 2) कार्य रूप में परिवर्तित हुआ प्रतीत होता है
 - 3) कारण , कारण ही रहता है
 - 4) कार्य नष्ट होने पर कारण भी नष्ट हो जाता है
-

Ques # :102

"my right is someone's duty and someone's right is my duty". the basis for this is -

- 1) all have their own duties
- 2) no one has a right
- 3) no right is dutyless
- 4) right has no relation with duty

मेरा अधिकार अन्य के लिए कर्तव्य है और अन्य का अधिकार मेरे लिए कर्तव्य है | इसका आधार है -

- 1) सभी के कर्तव्य होते हैं
 - 2) किसी का कोई अधिकार नहीं होता
 - 3) कोई अधिकार कर्तव्यरहित नहीं होता
 - 4) अधिकार का कर्तव्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता
-

Ques # :103

if a pot exists in clay or clay itself is pot , then what is the need to create a pot out of clay ? this argument is supportive of -

- 1) satkaryavada
- 2) vivartvada
- 3) asatkaryavada
- 4) pratityasamutpad

मिट्टी में ही यदि घड़ा है या घड़ा मिट्टी ही है तो घड़ा बनाने की क्या आवश्यकता है ? यह तर्क निम्न में से किसका समर्थन करता है -

- 1) सत्कार्यवाद का
 - 2) विवर्तवाद का
 - 3) असत्कार्यवाद का
 - 4) प्रतीत्यसमुत्पाद का
-

Ques # :104

g.e. moore is known as the author of famous book -

- 1) ethical understanding
- 2) principia ethica
- 3) nicomechanion ethics
- 4) ethical essays

जी.ई. मूर जिस प्रसिद्ध कृति के द्वारा जाने जाते हैं , वह है -

- 1) एथिकल अंडरस्टैंडिंग
 - 2) प्रिन्सिपिया एथिका
 - 3) निकोमेकेनियन एथिक्स
 - 4) एथिकल ऐसेस
-

Ques # :105

eudaimonism is that ethical principle according to which -

- 1) sensuous pleasure is the only good
- 2) self control of senses and ascetic life is good
- 3) duty for duty's sake is good
- 4) virtuous life is pleasant and that is the good

यूडोमोनिज्म वह नीतिशास्त्रीय सिद्धांत है जिसके अनुसार -

- 1) इन्द्रिय सुख ही शुभ है |
- 2) इन्द्रिय दमन और तपस्वी जीवन ही शुभ है |
- 3) कर्तव्य के लिए कर्तव्य पालन शुभ है |
- 4) सद्गुणमय जीवन ही सुखमय है और वही शुभ है |

Ques # :106

in comparison to sense contact , "sakshatkarittva" is more justified in perception . this is the opinion of -

- 1) maharshi gautam
- 2) udayana
- 3) gangeshopadhyaya
- 4) vachaspati mishra

"साक्षात्कारित्व" प्रत्यक्ष के लिए अधिक उपयुक्त है , इन्द्रिय सन्निकर्ष की तुलना में |" यह मान्यता है -

- 1) महर्षि गौतम की
- 2) उदयन की
- 3) गंगेशोपाध्याय की
- 4) वाचस्पति मिश्र की

Ques # :107

"dev rin is settled through performing yajna and rishi rin is settled through purusharth in acquiring knowledge . in vedic tradition this is prescribed for -

- 1) brahmin , kshatriya , vaishya , shudra . for all the four varnon
- 2) brahmin , kshatriya and vaishya
- 3) only for brahmin & kshatriya
- 4) only for brahmins

"देवऋण का परिशोध यज्ञ द्वारा और ऋषिऋण का परिशोध ज्ञानार्जन हेतु पुरुषार्थ द्वारा किया जाता है |" वैदिक परम्परा में यह विधान किया गया है -

- 1) ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र : इन चारों वर्णों के लिए
- 2) ब्राह्मण , क्षत्रिय और वैश्य के लिए
- 3) मात्र ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए
- 4) मात्र ब्राह्मण के लिए

Ques # :108

according to berkeley -

- 1) knowledge always knows only itself
- 2) knowledge knows an independent object from itself
- 3) knowledge is innate
- 4) knowledge is given by god

बर्कले के अनुसार -

- 1) ज्ञान सदैव मात्र स्वयं को ही जानता है |
- 2) ज्ञान अपने से स्वतंत्र पदार्थ को जानता है |
- 3)

- ज्ञान जन्मजात होता है |
4) ज्ञान ईश्वर प्रदत्त है |
-

Ques # :109

a word has many meanings and these meanings have family resemblance . this view is held by -

- 1) moore
- 2) russell
- 3) wittgenstein
- 4) carnap

एक शब्द के कई अर्थ होते हैं और उन अर्थों में पारिवारिक सादृश्य विद्यमान है | यह मत है -

- 1) मूर का
 - 2) रसल का
 - 3) विटगेन्सटाइन का
 - 4) कार्नेप
-

Ques # :110

the metaphysical problems related to space , time , etc are only linguistic problems and the only way to resolve these problems is to see the usage of these terms in different contexts . this view is held by -

- 1) ryle
- 2) austin
- 3) a.j. ayer
- 4) none of the above

देश काल आदि से संबंधित तत्वमीमांसीय समस्याएं भाषा जनित समस्याएं हैं तथा इन समस्याओं के निशकरण का एक मात्र उपाय इन पदों के विभिन्न सन्दर्भों में किये जा रहे प्रयोगों को देखना है | यह मत है -

- 1) राइल
 - 2) आस्टिन
 - 3) ए.जे. एयर
 - 4) उपरोक्त में से कोई नहीं
-

Ques # :111

according to buddhism anuman is -

- 1) parmarthic satya
- 2) samvriti satya
- 3) only imagination
- 4) indeterminate knowledge

बौद्ध दर्शन के अनुसार अनुमान है -

- 1) पारमार्थिक सत्य
 - 2) संवृत्ति सत्य
 - 3) कल्पना मात्र
 - 4) निर्विकल्पक ज्ञान
-

Ques # :112

according to buddhism brahmavihar is -

- 1) ahimsa , satya , acharya , brahmacharya
- 2) sheel , samadhi , pragya

- 3) maitree , karuna , mudita , upeksha
- 4) four noble truths

बौद्ध दर्शन के अनुसार ब्रह्मविहार हैं -

- 1) अहिंसा , सत्य , अचौर्य , ब्रह्मचर्य
 - 2) शील , समाधि , प्रज्ञा
 - 3) मैत्री , करुणा , मुदिता , उपेक्षा
 - 4) चार आर्य सत्य
-

Ques # :113

according to buddhism types of relation are -

- 1) tadatmya sambandh and sanyog sambandh
- 2) sanyog sambandh and samavaya
- 3) tadutpatti sambandh and sanyog sambandh
- 4) tadatmya sambandh and tadutpatti sambandh

बौद्ध दर्शन के अनुसार सम्बन्ध के प्रकार हैं -

- 1) तादात्म्य सम्बन्ध और संयोग सम्बन्ध
 - 2) संयोग सम्बन्ध और समवाय
 - 3) तदुत्पत्ति सम्बन्ध और संयोग सम्बन्ध
 - 4) तादात्म्य सम्बन्ध और तदुत्पत्ति सम्बन्ध
-

Ques # :114

according to jainism dravya is -

- 1) substratum of guna and karma
- 2) nirguna and niskriya
- 3) gunaparyayavan
- 4) only a name imposed on a cluster of gunas

जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य है -

- 1) गुण और कर्म का आधार
 - 2) निर्गुण और निष्क्रिय
 - 3) गुणपर्यायवान
 - 4) गुणों के समूह पर आरोपित एक नाम मात्र
-

Ques # :115

a cause is called necessary cause only if -

- 1) in its presence effect must be produced necessarily
- 2) in its absence effect cannot be produced
- 3) in its absence effect must be produced necessarily
- 4) in its absence effect may be produced some times

एक कारण को अनिवार्य कारण तभी कहा जाता है जबकि -

- 1) इसका सद्भाव होने पर कार्य अनिवार्य रूप से उत्पन्न हो |
 - 2) इसका अभाव होने पर कार्य उत्पन्न नहीं हो सकता |
 - 3) इसका अभाव होने पर कार्य अनिवार्यतया उत्पन्न होता है |
 - 4) इसका अभाव होने पर भी कभी कभी कार्य उत्पन्न हो सकता है |
-

Ques # :116

according to deterrent theory of punishment , it is given -

- 1) to reform the criminal
- 2) to prevent others from committing crime in future
- 3) as a consequence of their crime
- 4) none of the above

दण्ड के प्रतिरोधात्मक सिद्धांत के अनुसार दण्ड दिया जाता है -

- 1) अपराधी के सुधार के लिए
 - 2) भविष्य में अन्य व्यक्तियों को अपराध करने से रोकने के लिए
 - 3) अपराध के परिणामस्वरूप
 - 4) उपर्युक्त में से कोई नहीं
-

Ques # :117

moral sense theory is accepted by -

- 1) shaftsbury
- 2) kant
- 3) butler
- 4) moore

नैतिक संवित्तिवाद सिद्धांत स्वीकार किया गया है -

- 1) शेफ्ट्सबरी
 - 2) कांट
 - 3) बटलर
 - 4) मूर
-

Ques # :118

prechard rejects that :-

- 1) good is a fundamental concept and right and duty, and duty are defined by it
- 2) both good and duty are fundamental concepts
- 3) both good and duty are simple and unanalyzable and therefore indefinable
- 4) duty is known through institution

प्रिचर्ड यह अस्वीकार करना है कि -

- 1) शुभ एक मूल प्रत्यय है तथा उचित और कर्तव्य की परिभाषा शुभ द्वारा दी जाती है |
 - 2) शुभ और कर्तव्य दोनों मूलभूत प्रत्यय हैं |
 - 3) शुभ और कर्तव्य दोनों सरल और अविश्लेश्य हैं और इसलिए ये अपरिभाष्य हैं |
 - 4) कर्तव्य का ज्ञान अन्तः प्रज्ञा द्वारा होता है |
-

Ques # :119

according o jainism the praman from which the knowledge of vyapti relation is aquired, is -

- 1) pratyaksha
- 2) anumana
- 3) sabda
- 4) tarka

जैन दर्शन के अनुसार व्याप्ति सम्बन्ध का ज्ञान जिस प्रमाण से होता है वह है -

- 1) प्रत्यक्ष
- 2)

अनुमान

- 3) शब्द
 - 4) तर्क
-

Ques # :120

memory is prama according to

- 1) jainism
- 2) buddhism
- 3) nyaya philosophy
- 4) kumaril

स्मृति प्रमा है -

- 1) जैन दर्शन के अनुसार
 - 2) बौद्ध दर्शन के अनुसार
 - 3) न्याय दर्शन के अनुसार
 - 4) कुमारिल के अनुसार
-

Ques # :121

according to ramanuja, moksh is attained through

- 1) brahmagyan
- 2) nishkam karma
- 3) performing nitya and naimittik karma according to vedas
- 4) bhakti and prapatti of god

रामानुज के अनुसार मोक्ष प्राप्ति का उपाय है -

- 1) ब्रह्मज्ञान
 - 2) निष्काम कर्म
 - 3) वेद विहित नित्य और नैमित्तिक कर्मों का सम्पादन
 - 4) ईश्वर की भक्ति और प्रपत्ति
-

Ques # :122

according to indian tradition dharma is not that

- 1) from which abhyudaya and nishreyasa can be attained
- 2) that which bears the society or makes social order possible
- 3) that which is the nature of a thing
- 4) that which commists of only visiting temples, worshiping, going for pilgrimage and other external rituals

भारतीय परम्परा के अनुसार धर्म वह नहीं है -

- 1) जिसके द्वारा अभ्युदय और निश्चयस प्राप्त किया जाता है |
 - 2) जो समाज को धारण करता है अर्थात सामाजिक व्यवस्था को सम्भव बनाता है |
 - 3) जो जिस वस्तु का स्वभाव है |
 - 4) जो मात्र मंदिर जाना , पूजा करना , तीर्थ यात्रा करना आदि बाहरी क्रियाकाण्ड रूप ही है |
-

Ques # :123

for rational intuitionist philosphers that which is not correct is :-

- 1) moral principles are known through intuition
- 2) moral principles are rational as mathematical principles
- 3) moral principles are emotional as aesthetic principles

4) moral principles are eternal and objective

बौद्धिक अन्तः प्रजावादी दार्शनिकों के अनुसार जो सही नहीं है वह है

- 1) नैतिक नियमों का ज्ञान अन्तः प्रजा द्वारा होता है |
- 2) नैतिक नियमों का ज्ञान गणित के नियमों के समान बौद्धिक होता है |
- 3) नैतिक नियमों का ज्ञान सौन्दर्यशास्त्र के नियमों के समान भावनात्मक होता है |
- 4) नैतिक नियम शाश्वत और वस्तुनिष्ठ होते हैं |

Ques # :124

according to buddhism panchsheel are -

- 1) maitri, karuna, kshma, dhairya, shanti
- 2) samyak dristi, samyak sankalp, samyak vak, samyak karmant, samyak aajivak
- 3) ahinsa, satya, achaurya, brahmachrya, nashe ka tyaga
- 4) ahinsa, maitri karuna, mudita, upeksha

बौद्ध दर्शन के अनुसार पंचशील हैं -

- 1) मैत्री , करुणा , क्षमा , धैर्य , शान्ति
- 2) सम्यक दृष्टि , सम्यक संकल्प , सम्यक वाक् , सम्यक कर्मान्त , सम्यक् आजीवक
- 3) अहिंसा , सत्य , अचौर्य , ब्रह्मचर्य , नशे का त्याग
- 4) अहिंसा , मैत्री , करुणा , मुदिता , उपेक्षा

Ques # :125

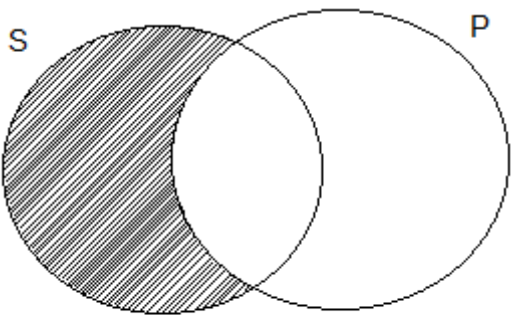
in a categorical proposition a quantifier determines the quantity of :-

- 1) subject term
- 2) prodcate term
- 3) both subject and predicate term
- 4) neither subject nor predicate term

एक निरुपाधिक तर्कवाक्य मे परिमाणक द्वारा परिमाण निर्धारित किया जाता है :-

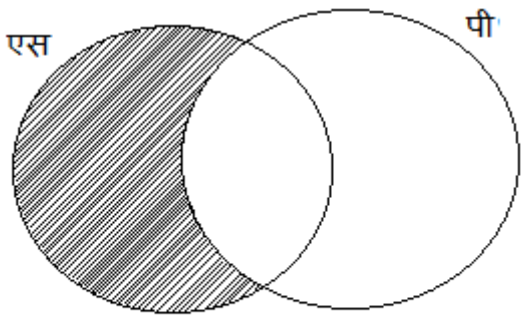
- 1) उद्देश्य पद का ;
- 2) विधेय पद का ;
- 3) उद्देश्य और विधेय दोनों पदों का ;
- 4) न उद्देश्य और न ही विधेय पद का ;

Ques # :126



The above diagram shows that :-

- 1) all s is p
- 2) no s is p
- 3) some s is p
- 4) some s is not p



उपरोक्त रेखांकन दर्शाता है कि :-

- 1) सभी 'एस' 'पी' हैं;
- 2) कोई 'एस' 'पी' नहीं है;
- 3) कुछ 'एस' 'पी' हैं;
- 4) कुछ 'एस' 'पी' नहीं है ;

Ques # :127

promises of an inductive argument

- 1) are necessary and universal propositions
- 2) apriori propositions
- 3) provide conclusive ground for its conclusion
- 4) do not provide conclusive ground for its conclusion

एक आगमनात्मक तर्क के आधार वाक्य :

- 1) अनिवार्य और सर्वव्यापी तर्कवाक्य होते हैं।
- 2) प्रागानुभविक तर्कवाक्य होते हैं।
- 3) अपने निष्कर्ष के लिये निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
- 4) अपने निष्कर्ष के लिए निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करते।

Ques # :128

which of the following has a free variable :-

- 1) $(\exists x) (Lxy)$
- 2) $(\exists x) (\exists y) (Lxy)$
- 3) $(\exists x) (\exists y) [Lxy \& (\exists z) (Hxz)]$
- 4) $(x) (Mx \rightarrow Wx)$

निम्नलिखित में से जिस तर्कवाक्य में मुक्तचर है, वह है :

- 1) $(\exists x) (Lxy)$
- 2) $(\exists x) (\exists y) (Lxy)$
- 3) $(\exists x) (\exists y) [Lxy \& (\exists z) (Hxz)]$
- 4) $(x) (Mx \rightarrow Wx)$

Ques # :129

meaning of completeness of an axiomatic system is -

- 1) in this system from a given set of premises , p and -p both cannot be derived
- 2) all conclusions which logically follow from the given set of premises can be derived
- 3) no conclusion can be derived from the given set of premises
- 4) any conclusion can be derived from the given set of premises

एक निगमनात्मक तंत्र (axiomatic system) की पूर्णता का आशय है की इस तंत्र में आधारवाक्यों के समूह से

- 1)

- p और -p दोनों को निगमित नहीं किया जा सकता
- 2) तार्किक रूप से निगमित होने वाले सभी निष्कर्षों को निगमित किया जा सकता है।
 - 3) किसी भी निष्कर्ष को निगमित नहीं किया जा सकता।
 - 4) किसी भी निष्कर्ष को निगमित किया जा सकता है।
-

Ques # :130

from the following which is a standard form categorical propositions -

- 1) socrates is mortal
- 2) if there is smoke there is fire also
- 3) man is intelligent
- 4) some men are player

निम्न में से मानक आकार का निरुपाधिक तर्क वाक्य है

- 1) सुकरात मरणशील है।
 - 2) यदि धुआँ है तो आग भी है।
 - 3) मनुष्य बुद्धिमान है।
 - 4) कुछ मनुष्य खिलाड़ी हैं।
-

Ques # :131

all rabbits are vary fast runners . some horses are vary fast runners . therefore some horses are rabbits . the name of the mood and figure of the above categorical syllogism is -

- 1) aii - 1
- 2) aii - 2
- 3) aii - 3
- 4) aii - 4

सभी खरगोश बहुत तेज धावक हैं | कुछ घोड़े बहुत तेज धावक हैं | अतः कुछ घोड़े खरगोश हैं | उपरोक्त निरुपाधिक न्यायवाक्य की अवस्था और आकृति का नाम है :-

- 1) aii - 1
 - 2) aii - 2
 - 3) aii - 3
 - 4) aii - 4
-

Ques # :132

a deductive argument is invalid only if -

- 1) its all premises are true and conclusion is true
- 2) its all premises are true and conclusion is false
- 3) its all premises are false and conclusion is true
- 4) its all premises are false and conclusion is false

एक निगमात्मक युक्ति तभी अवैध होती है जबकि

- 1) इसके सभी आधारवाक्य सत्य होते हैं और निष्कर्ष सत्य होता है।
 - 2) इसके सभी आधारवाक्य सत्य होते हैं और निष्कर्ष असत्य होता है।
 - 3) इसके सभी आधारवाक्य असत्य होते हैं और निष्कर्ष सत्य होता है।
 - 4) इसके सभी आधारवाक्य असत्य होते हैं और निष्कर्ष असत्य होता है।
-

Ques # :133

Which of the following is a substitution instance of the argument form – $P \rightarrow q$

- 1) $\therefore P$
 $A \rightarrow B$
- 2) $\therefore A$
 $(A \rightarrow B) \& (C \rightarrow D)$
- 3) $\therefore A \rightarrow B$
 $(A \& B) \rightarrow -C$
 $--C$
- 4) $\therefore -(A \& B)$
 $A \vee B$
 $\therefore A$

युक्ति आकार $p \rightarrow q$ का निम्न में से प्रतिस्थापन उदाहरण है

- 1) $\therefore p$
 $A \rightarrow B$
- 2) $\therefore A$
 $(A \rightarrow B) \& (C \rightarrow D)$
- 3) $\therefore A \rightarrow B$
 $(A \& B) \rightarrow -C$
 $--C$
- 4) $\therefore -(A \& B)$
 $A \vee B$
 $\therefore A$

Ques # :134

subject term and predicate term both are undistributed in -

- 1) universal affirmative proposition
- 2) universal negative proposition
- 3) existential affirmative proposition
- 4) existential negative proposition

उद्देश्य और विधेय दोनों पद अव्याप्त होते हैं

- 1) सर्वव्यापी विध्यात्मक तर्कवाक्य में ;
- 2) सर्वव्यापी निषेधात्मक तर्कवाक्य में ;
- 3) अंशव्यापी विध्यात्मक तर्कवाक्य में ;
- 4) अंशव्यापी निषेधात्मक तर्कवाक्य में ;

Ques # :135

"the propositions "p is" and "p is not" cannot be true simultaneously". this law of thought is called -

- 1) law is identity
- 2) law of contradiction
- 3) law of excluded middle
- 4) demorgan's law

" " p है " और " p नहीं है " तर्कवाक्य एक साथ सत्य नहीं हो सकते | " विचार के इस नियम को कहा जाता है :-

- 1) तादात्म्य का नियम
- 2) व्याघात का नियम

3) मध्यपरिहार का नियम

4) डेमार्गन का नियम

Ques # :136

Formula $\neg(\exists x)(Fx \& \neg Gx)$ is not equivalent to which of the following -.

- 1) $(x) \neg (Fx \& \neg Gx)$
- 2) $(x) \neg (Fx \vee Gx)$
- 3) $(x) (Fx \rightarrow Gx)$
- 4) $(x) (Fx \vee \neg Gx)$

सूत्र - $(\exists x)(Fx \& \neg Gx)$ निम्न में से किसके समतुल्य नहीं है :-

- 1) $(x) \neg (Fx \& \neg Gx)$
- 2) $(x) \neg (Fx \vee Gx)$
- 3) $(x) (Fx \rightarrow Gx)$
- 4) $(x) (Fx \vee \neg Gx)$

Ques # :137

- I. $(x) Hx \rightarrow Mx$
- II. $Hx \quad \therefore Mx$
- III. $Hx \rightarrow Mx$
- IV. Mx

In the above derivation, the rule of inference used in the line no. III is

- 1) universal generalization
- 2) universal specification
- 3) existential generalization
- 4) existential specification

- I. $(x) Hx \rightarrow Mx$
- II. $Hx \quad \therefore Mx$
- III. $Hx \rightarrow Mx$
- IV. Mx

उपर्युक्त निगमन की पंक्ति संख्या III में अनुमान के जिस नियम का प्रयोग किया गया है, वह है :-

- 1) सर्वव्यापी सामान्यीकरण
- 2) सर्वव्यापी दृष्टान्तीकरण
- 3) अंशव्यापी सामान्यीकरण
- 4) अंशव्यापी दृष्टान्तीकरण

Ques # :138

which of the following moods is valid in all four figures ?

- 1) aee
- 2) eio
- 3) eae
- 4) iai

निम्नलिखित अवस्थाओं में से कौनसी सभी चार आकृतियों में प्रमाणिक है

- 1) aee
 - 2) eio
 - 3) eae
 - 4) iai
-

Ques # :139

which of the following is a truth - functional sentence -

- 1) close the door
- 2) one should always speak the truth
- 3) if today is sunday then tomorrow will be monday
- 4) all of the above

निम्न में से कौनसा सत्यफनात्मक वाक्य है

- 1) दरवाज़ा बन्द करो |
 - 2) सदैव सत्य बोलना चाहिए |
 - 3) यदि आज रविवार है तो कल सोमवार होगा |
 - 4) उपर्युक्त सभी |
-

Ques # :140

according to jainism samyak charitra is -

- 1) from which a person can attain maximum happiness in this life
- 2) vedavihit karma
- 3) those actions which are cause of asrav and bandh of karmas
- 4) those actions which are cause of samvar and nirjara of karmas

जैन दर्शन के अनुसार सम्यक् चरित्र है

- 1) वह आचरण जिसके द्वारा व्यक्ति का यह जीवन अधिकतम सुखमय होता है |
 - 2) वेद विहित कर्म |
 - 3) कर्मों के आस्रव और बंध की कारणभूत क्रियाएँ
 - 4) कर्मों के संवर और निर्जरा की कारणभूत क्रियाएँ
-

Ques # :141

according to jainism samyakgyaan is -

- 1) true knowledge of worldly objects
- 2) true information related to the seven tatvas such as jive ajive etc
- 3) knowledge of jive and other tatvas with reverence
- 4) indeterminate knowledge

जैन दर्शन के अनुसार सम्यकज्ञान है

- 1) जगत के पदार्थों का यथार्थ ज्ञान
 - 2) जीव, अजीव आदि सात तत्वों की यथार्थ जानकारी
 - 3) जीवादि तत्वों का श्रद्धा से सम्पन्न ज्ञान
 - 4) निर्विकल्पक ज्ञान
-

Ques # :142

buddhist philosophers refute the existence of a parmanent soul . the memory , bondage , liberation karm siddhant are -

- 1) explained through the notion of anadi vasana .

- 2) explained through the relation of causation in vigyaan kshans .
- 3) not able to explain them , hence are doubtful about these .
- 4) they do not accept bandhan , moksh , karmvaid , etc .

बौद्ध दार्शनिक नित्य आत्मा की सत्ता को अस्वीकार करते हैं | वे स्मृति, बन्धन और मोक्ष, कर्म सिद्धांत आदि

- 1) की व्याख्या अनादि वासना की अवधारणा द्वारा करते हैं |
- 2) की व्याख्या विज्ञान क्षणों के मध्य कारणकार्य सम्बन्ध के आधार पर करते हैं |
- 3) की व्याख्या नहीं कर पाते और इनके प्रति संशयात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं |
- 4) बन्धन मोक्ष कर्मवाद आदि को अस्वीकार करते हैं |

Ques # :143

among the following which does not advocate group rights , as a variant of human rights -

- 1) liberalism
- 2) communitarionism
- 3) multi - culturism
- 4) differentiated citizenship

निम्न में से कौन मानवाधिकारों के परिवर्त्य के रूप में समूह अधिकारों का समर्थन नहीं करता |

- 1) उदारवाद
- 2) समुदायवाद
- 3) बहुसंस्कृतिवाद
- 4) विभेदीकृत नागरिकताएँ

Ques # :144

who of the following , differentiate between natural and traditional inequalities -

- 1) locke
- 2) cisero
- 3) aristotle
- 4) rousseau

निम्न में से किसने प्राकृतिक एवं परम्परागत असमानताओं के भेद को निरूपित किया |

- 1) लॉक
- 2) सिसरो
- 3) अरस्तु
- 4) रूसो

Ques # :145

which one of the following groups of thinkers supports "gender equality"?

- 1) aristotle - benthan - hobbes
- 2) plato - j.s. mill - engels
- 3) rousseau - hegal - mill
- 4) hobbes - hegal - mill

निम्न में से कौनसा विचारक समूह " लैंगिक समानता " का समर्थन करता है

- 1) अरस्तु - बैन्थम - हॉब्स
- 2) प्लैटो - जे.एस. मिल - ऐंगल्स
- 3) रूसो - हेगल - मिल
- 4) हॉब्स - हेगल - मिल

Ques # :146

consider the following statements regarding marxism on liberal perspective of human rights : i. civil rights are claimed to be human rights in liberal discourse . ii. due to alienation in capitalist society , liberal claim is a fraud.

- 1) only i is correct
- 2) only ii is correct
- 3) both i and ii are correct
- 4) neither i , nor ii is correct

मनवाधिकारों के उदारवादी परिपेक्ष्य पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण के निम्न कथनों पर विचार करिये i. उदारवादी विमर्श में सिविल अधिकारों के मानवाधिकार होने का दावा किया जाता है | ii. पूंजीवादी समाज में अलगाव के कारण यह उदारवादी दावा छल है |

- 1) केवल i सही है
- 2) केवल ii सही है
- 3) i और ii दोनों सही है
- 4) न तो i एवं ना ही ii सही है |

Ques # :147

according to sunyavad pamarthik satta -

- 1) has relative nature
- 2) is describable
- 3) chatushkotivinirmukta
- 4) is pure absence

शून्यवाद के अनुसार पारमार्थिक सत्ता

- 1) सापेक्ष स्वरूप से युक्त है |
- 2) वर्णन योग्य है |
- 3) चतुष्कोटिविनिर्मुक्त है |
- 4) शुद्ध अभाव है |

Ques # :148

"my station and its duties" this is said by -

- 1) mill
- 2) hegal
- 3) herbert spencer
- 4) bradley

"मेरा स्थान और उसके अनुरूप कर्तव्य" यह कहा गया है :-

- 1) मिल
- 2) हीगल
- 3) हर्वर्ट स्पेंसर
- 4) ब्रैडले

Ques # :149

knowledge by aquintence and knowledge by description : these two types of knowledge are accepted by -

- 1) locke
- 2) russell
- 3) pierce

4) wittgenstein

परिचयात्मक ज्ञान और वर्णनात्मक ज्ञान : ज्ञान के ये प्रकार स्वीकार करता है

- 1) लॉक
 - 2) रसल
 - 3) पर्स
 - 4) विटेगेन्सटाइन
-

Ques # :150

the author of brahmasutrashreebasha is -

- 1) sankara
- 2) nimbark
- 3) madhva
- 4) none of the above

ब्रह्मसूत्र श्रीभाष्य के लेखक हैं :-

- 1) शंकर
 - 2) निम्बार्क
 - 3) मध्व
 - 4) इनमे से कोई नहीं
-